

Quick word tests

तरक्क्री	तरक्की	आह्लाद	आह्लाद	फ्रीज	फ्रीज	मगज़	मगज़	हृत्स्थल	हृत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	ह्रितिक	ह्रितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्ना	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्ज़ूर	मन्ज़ूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्ज़े	एल्ज़े	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट	ईषत्स्पृष्ट	इश्क	इश्क
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य	उत्प	उत्प	पंक्ति	पंक्ति	उत्सुत	उत्सुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्प	उत्प	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी	छुट्टी	इल्ज़ाम	इल्ज़ाम	रत्न	रत्न	दुर्लभ्य	दुर्लभ्य	सद्गन्ध	सद्गन्ध	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़्स	सज़्स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्जा	एज्जा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दर्शात	दर्शात	मौके	मौके	ब्यर्थे	ब्यर्थे	उज़्र	उज़्र	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	कैंटोमेंट	तरक्क्री	तरक्की	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्लाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ़ैक्चर	फ़ैक्चर	हिंस्र	हिंस्र	द्रव	द्रव	हास	हास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	छुट्टी	दारिद्र्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रन	राष्ट्रन	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिट्ठी	अधुव	अधुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	काफी	काफी	रक्त	रक्त	विशाखपट्नम	विशाखपट्नम	मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्तः
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	हिंदू-मुस्लिम	वक्त्र	वक्त्र	ट्रेन	ट्रेन	मंज़ी	मंज़ी	अंतर्वेशन	अंतर्वेशन
सान्ध्य	सान्ध्य	करणाया	करणाया	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इज़्जत	इज़्जत	स्नेह	स्नेह	वक्त्र	वक्त्र	लड्डू	लड्डू	द्वंद्व	द्वंद्व	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उज्ज्वल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछुंदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्षा	रिक्षा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकतीस	इकतीस	ध्यां	ध्यां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सत्रह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्प्रहक	विद्युत्प्रहक	दीन्हो	दीन्हो	कुरी	कुरी
पद्म	पद्म	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कट्टू	कट्टू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख्त	सख्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्जी	सब्जी		
पश्चिम	पश्चिम	हूँ	हूँ	अख्त्यार	अख्त्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख्म	ज़ख्म	सपत्न्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	ख्रिष्टां	ख्रिष्टां	उत्प्रवास	उत्प्रवास	दुर्ज्ञेय	दुर्ज्ञेय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़ख्र	फ़ख्र	ल्याहिक	ल्याहिक	उर्दू	उर्दू		
बुद्ध	बुद्ध	हूप	हूप	अग्रास	अग्रास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व		

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्रवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात् तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात् एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात् निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात् उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो खुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो खुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्रवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ ॥ अर्थात् तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात् एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात् निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात् उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो खुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो खुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके,
मिडकैप-स्मॉलकैप में
उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा
निकालने पर देना होगा
टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की
मेहनत, चीन से आया
तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद
शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए
दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं
होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़
में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के
सामने लगे 'प्रियंका-
प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

उग्र में अंधेरा दूर करने के
लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो
अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके,
मिडकैप-स्मॉलकैप में
उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा
निकालने पर देना होगा
टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की
मेहनत, चीन से आया
तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद
शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए
दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं
होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़
में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के
सामने लगे 'प्रियंका-
प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

उग्र में अंधेरा दूर करने के
लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो
अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फ़ैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़ें - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फ़ैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़ें - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date: Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date: Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमशः 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5 मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1 वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4 एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमशः 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5 मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1 वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4 एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरु। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बेंगलुरु। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रैंड फैशन इन्वेट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवतः खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवतः खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट ॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान ॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसँ भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोटा हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसँ भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोटा हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

pg 7/18

पपच; पवचः	पपङ; पवङः	पपर; पवरः	पपहु; पवहुः	पपम। पवमः	पपओ। पवओः	पपह। पवहः
पपछ; पवछः	पपढ़; पवढ़ः	पपह; पवहः	पपहू; पवहूः	पपय। पवयः	पपऔ। पवऔः	पपष्ट। पवष्टः
पपज; पवजः	पपफ; पवफः	पपळ; पवळः	पपरु; पवरुः	पपर। पवरः	पपक्र। पवक्रः	पपष्ट्र। पवष्ट्रः
पपझ; पवझः	पपय; पवयः		पपरू; पवरूः	पपल। पवलः	पपक्र। पवक्रः	पपष्ठ। पवष्ठः
पपञ; पवञः	पपक्ष; पवक्षः	पपक्त; पवक्तः	पपदु; पवदुः	पपळ। पवळः	पपलृ। पवलृः	पपष्ठ्र। पवष्ठ्रः
पपट; पवटः	पपज्ञ; पवज्ञः	पपङ्ग; पवङ्गः	पपदू; पवदूः	पपव। पववः	पपलृ। पवलृः	पपल्ल। पवल्लः
पपठ; पवठः		पपङ्ग; पवङ्गः	पपदृ; पवदृः	पपश। पवशः		पपल्ल। पवल्लः
पपड; पवडः	पपअ; पवअः	पपट्ट; पवट्टः	-	पपष। पवषः	पपङ्ग। पवङ्गः	पपल्ल। पवल्लः
पपढ; पवढः	पपओ; पवओः	पपट्ट; पवट्टः		पपस। पवसः	पपछ। पवछः	पपह। पवहः
पपण; पवणः	पपऑ; पवऑः	पपठु; पवठुः	पपक। पवकः	पपह। पवहः	पपट्र। पवट्रः	पपहु। पवहुः
पपत; पवतः	पपइ; पवइः	पपडू; पवडूः	पपख। पवखः	पपक्र। पवक्रः	पपट्र। पवट्रः	पपहू। पवहूः
पपथ; पवथः	पपई; पवईः	पपडु; पवडुः	पपग। पवगः	पपख। पवखः	पपङ्ग। पवङ्गः	पपह। पवहः
पपद; पवदः	पपउ; पवउः	पपडू; पवडूः	पपघ। पवघः	पपग। पवगः	पपद्र। पवद्रः	पपह। पवहः
पपध; पवधः	पपऊ; पवऊः	पपद्ध; पवद्धः	पपङ। पवङः	पपज। पवजः	पपद्र। पवद्रः	पपहु। पवहुः
पपन; पवनः	पपए; पवएः	पपद्ग; पवद्गः	पपच। पवचः	पपङ। पवङः	पपरु। पवरुः	पपहु। पवहुः
पपप; पवपः	पपऐ; पवऐः	पपद्ध; पवद्धः	पपछ। पवछः	पपढ़। पवढ़ः	पपह। पवहः	पपहू। पवहूः
पपफ; पवफः	पपऐ; पवऐः	पपद्ध; पवद्धः	पपज। पवजः	पपफ। पवफः	पपळ। पवळः	पपरु। पवरुः
पपब; पवबः	पपऐ; पवऐः	पपद्ध; पवद्धः	पपझ। पवझः	पपय। पवयः		पपरू। पवरूः
पपभ; पवभः	पपआ; पवआः	पपद्ध; पवद्धः	पपञ। पवञः	पपक्ष। पवक्षः	पपक्त। पवक्तः	पपदु। पवदुः
पपम; पवमः	पपओ; पवओः	पपह; पवहः	पपट। पवटः	पपज्ञ। पवज्ञः	पपङ्ग। पवङ्गः	पपदू। पवदूः
पपय; पवयः	पपऔ; पवऔः	पपष्ट; पवष्टः	पपठ। पवठः		पपङ्ग। पवङ्गः	पपदृ। पवदृः
पपर; पवरः	पपक्र; पवक्रः	पपष्ट्र; पवष्ट्रः	पपड। पवडः	पपअ। पवअः	पपट्ट। पवट्टः	-
पपल; पवलः	पपक्र; पवक्रः	पपष्ठ; पवष्ठः	पपढ। पवढः	पपओ। पवओः	पपट्ट। पवट्टः	पपक! पवक?
पपळ; पवळः	पपलृ; पवलृः	पपष्ठ्र; पवष्ठ्रः	पपण। पवणः	पपऑ। पवऑः	पपठु। पवठुः	पपख! पवख?
पपव; पववः		पपल्ल; पवल्लः	पपत। पवतः	पपइ। पवइः	पपडू। पवडूः	पपग! पवग?
पपश; पवशः		पपल्ल; पवल्लः	पपथ। पवथः	पपई। पवईः	पपडु। पवडुः	पपघ! पवघ?
पपष; पवषः	पपङ्ग; पवङ्गः	पपल्ल; पवल्लः	पपद। पवदः	पपउ। पवउः	पपडू। पवडूः	पपङ! पवङ?
पपस; पवसः	पपछ; पवछः	पपल्ल; पवल्लः	पपध। पवधः	पपऊ। पवऊः	पपद्ध। पवद्धः	पपच! पवच?
पपह; पवहः	पपट्र; पवट्रः		पपन। पवनः	पपए। पवएः	पपद्ग। पवद्गः	पपछ! पवछ?
पपक्र; पवक्रः	पपट्र; पवट्रः	पपहु; पवहुः	पपप। पवपः	पपऐ। पवऐः	पपद्ग। पवद्गः	पपज! पवज?
पपख; पवखः	पपड्र; पवड्रः	पपहू; पवहूः	पपफ। पवफः	पपऐ। पवऐः	पपद्ध। पवद्धः	पपझ! पवझ?
पपग; पवगः	पपङ्ग; पवङ्गः	पपह; पवहः	पपब। पवबः	पपऐ। पवऐः	पपद्ध। पवद्धः	पपञ! पवञ?
पपज; पवजः	पपद्र; पवद्रः	पपह; पवहः	पपभ। पवभः	पपआ। पवआः	पपद्ध। पवद्धः	

पपट! पवट?	पपज्ञ! पवज्ञ?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपदू! पवदू?	पपव-वपव	पपलृ-लृपव	पपल्ल-ल्लपव
पपठ! पवठ?		पपङ्ग! पवङ्ग?	पपदृ! पवदृ?	पपश-शपव		पपल्ल-ल्लपव
पपड! पवड?	पपअ! पवअ?	पपट्ट! पवट्ट?		पपष-षपव	पपङ्ग-ङ्गपव	पपल्ल-ल्लपव
पपढ! पवढ?	पपअै! पवअै?	पपट्ट! पवट्ट?	-	पपस-सपव	पपछ-छपव	पपल्ल-ल्लपव
पपण! पवण?	पपअँ! पवअँ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपक-कपव	पपह-हपव	पपट्ट-ट्टपव	
पपत! पवत?	पपइ! पवइ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपख-खपव	पपक्र-क्रपव	पपट्ट-ट्टपव	पपहु-हुपव
पपथ! पवथ?	पपई! पवई?	पपट्ट! पवट्ट?	पपग-गपव	पपख-खपव	पपङ्ग-ङ्गपव	पपहू-हूपव
पपद! पवद?	पपउ! पवउ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपघ-घपव	पपग-गपव	पपङ्ग-ङ्गपव	पपह-हपव
पपध! पवध?	पपऊ! पवऊ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपङ-ङपव	पपज-जपव	पपङ्ग-ङ्गपव	पपहू-हूपव
पपन! पवन?	पपए! पवए?	पपट्ट! पवट्ट?	पपच-चपव	पपङ-ङपव	पपङ्ग-ङ्गपव	पपहु-हुपव
पपप! पवप?	पपऐ! पवऐ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपछ-छपव	पपढ-ढपव	पपङ्ग-ङ्गपव	पपहू-हूपव
पपफ! पवफ?	पपऐ! पवऐ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपज-जपव	पपफ-फपव	पपङ्ग-ङ्गपव	पपहू-हूपव
पपब! पवब?	पपऐ! पवऐ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपझ-झपव	पपय-यपव	पपङ्ग-ङ्गपव	पपरु-रुपव
पपभ! पवभ?	पपआ! पवआ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपञ-ञपव	पपक्ष-क्षपव		पपरू-रूपव
पपम! पवम?	पपओ! पवओ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपट-टपव	पपझ-झपव	पपक्त-क्तपव	पपदु-दुपव
पपय! पवय?	पपऔ! पवऔ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपठ-ठपव		पपङ्ग-ङ्गपव	पपदू-दूपव
पपर! पवर?	पपक्र! पवक्र?	पपट्ट! पवट्ट?	पपङ-ङपव	पपअ-अपव	पपङ्ग-ङ्गपव	पपदृ-दृपव
पपल! पवल?	पपक्र! पवक्र?	पपट्ट! पवट्ट?	पपढ-ढपव	पपअै-अैपव		-
पपळ! पवळ?	पपलृ! पवलृ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपण-णपव	पपअँ-अँपव	पपट्ट-ट्टपव	"कपवपक"
पपव! पवव?	पपलृ! पवलृ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपत-तपव	पपङ-ङपव	पपट्ट-ट्टपव	"खपवपख"
पपश! पवश?		पपट्ट! पवट्ट?	पपथ-थपव	पपई-ईपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"गपवपग"
पपष! पवष?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपट्ट! पवट्ट?	पपद-दपव	पपउ-उपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"घपवपघ"
पपस! पवस?	पपछ! पवछ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपध-धपव	पपऊ-ऊपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"ङपवपङ"
पपह! पवह?	पपट्ट! पवट्ट?	पपट्ट! पवट्ट?	पपन-नपव	पपए-एपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"चपवपच"
पपक्र! पवक्र?	पपट्ट! पवट्ट?	पपट्ट! पवट्ट?	पपप-पपव	पपऐ-ऐपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"छपवपछ"
पपख! पवख?	पपट्ट! पवट्ट?	पपट्ट! पवट्ट?	पपफ-फपव	पपऐ-ऐपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"जपवपज"
पपग! पवग?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपट्ट! पवट्ट?	पपब-बपव	पपऐ-ऐपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"झपवपझ"
पपज! पवज?	पपट्ट! पवट्ट?	पपट्ट! पवट्ट?	पपभ-भपव	पपआ-आपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"ञपवपञ"
पपङ! पवङ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपट्ट! पवट्ट?	पपम-मपव	पपओ-ओपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"टपवपट"
पपढ! पवढ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपट्ट! पवट्ट?	पपय-यपव	पपऔ-औपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"ठपवपठ"
पपफ! पवफ?	पपह! पवह?	पपट्ट! पवट्ट?	पपर-रपव	पपक्र-क्रपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"डपवपड"
पपय! पवय?	पपळ! पवळ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपल-लपव	पपक्र-क्रपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"ढपवपढ"
पपक्ष! पवक्ष?	पपळ! पवळ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपळ-ळपव	पपलृ-लृपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"णपवपण"
	पपक्त! पवक्त?	पपट्ट! पवट्ट?				

"तपवपत"	"इपवपइ"	"डुपवपडु"	Num-punct spacing	li Vowel sign - base	पपळिपपळिंपपळिंपप
"थपवपथ"	"ईपवपई"	"डुपवपडु"	पवप ₹१०१ वपव	पपकिपपकिंपपकिंपप	पपविपपविंपपविंपप
"दपवपद"	"उपवपउ"	"डुपवपडु"	पवप ₹२०१ वपव	पपखिपपखिंपपखिंपप	पपशिपपशिंपपशिंपप
"धपवपध"	"ऊपवपऊ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹३०१ वपव	पपगिपपगिंपपगिंपप	पपषिपपषिंपपषिंपप
"नपवपन"	"एपवपए"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹४०१ वपव	पपघिपपघिंपपघिंपप	पपसिपपसिंपपसिंपप
"पपवपप"	"ऐपवपऐ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹५०१ वपव	पपङिपपङिंपपङिंपप	पपहिपपहिंपपहिंपप
"फपवपफ"	"ऐपवपऐवव"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹६०१ वपव	पपचिपपचिंपपचिंपप	पपक्षिपपक्षिंपपक्षिंपप
"बपवपब"	"ऐपवपऐ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹७०१ वपव	पपछिपपछिंपपछिंपप	पपज्ञिपपज्ञिंपपज्ञिंपप
"भपवपभ"	"आपवपआ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹८०१ वपव	पपजिपपजिंपपजिंपप	
"मपवपम"	"ओपवपओ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹९०१ वपव	पपझिपपझिंपपझिंपप	
"यपवपय"	"औपवपऔ"	"द्वपवपद्व"		पपजिपपजिंपपजिंपप	
"रपवपर"	"ऋपवपऋ"	"द्वपवपद्व"	०००,०१०,०११	पपटिपपटिंपपटिंपप	
"लपवपल"	"ऋपवपऋ"	"द्वपवपद्व"	००१,०१०,१११	पपठिपपठिंपपठिंपप	
"ळपवपळ"	"लृपवपलृ"	"द्वपवपद्व"	००२,०१०,२११	पपडिपपडिंपपडिंपप	
"वपवपव"	"लृपवपलृ"	"द्वपवपद्व"	००३,०१०,३११	पपढिपपढिंपपढिंपप	
"शपवपश"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००४,०१०,४११	पपणिपपणिंपपणिंपप	
"षपवपष"	"छपवपछ"	"द्वपवपद्व"	००५,०१०,५११	पपतिपपतिंपपतिंपप	
"सपवपस"	"ट्रपवपट्र"	"द्वपवपद्व"	००६,०१०,६११	पपथिपपथिंपपथिंपप	
"हपवपह"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००७,०१०,७११	पपदिपपदिंपपदिंपप	
"कपवपक"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००८,०१०,८११	पपधिपपधिंपपधिंपप	
"खपवपख"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००९,०१०,९११	पपनिपपनिंपपनिंपप	
"गपवपग"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"		पपपिपपपिंपपपिंपप	
"जपवपज"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	०००,०१०,०११	पपफिपपफिंपपफिंपप	
"ङपवपङ"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००१,०१०,१११	पपबिपपबिंपपबिंपप	
"ढपवपढ"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००२,०१०,२११	पपभिपपभिंपपभिंपप	
"फ़पवपफ़"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००३,०१०,३११	पपमिपपमिंपपमिंपप	
"य़पवपय़"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००४,०१०,४११	पपयिपपयिंपपयिंपप	
"क्षपवपक्ष"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००५,०१०,५११	पपरिपपरिंपपरिंपप	
"ज्ञपवपज्ञ"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००६,०१०,६११	पपलिपपलिंपपलिंपप	
	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००७,०१०,७११		
"अपवपअ"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००८,०१०,८११		
"ओपवपओ"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००९,०१०,९११		
"ऑपवपऑ"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"			

pg 12/18

[illegible]

पपघ्कपपघ्खपपघ्गपपघ्यपपघ्हपपघ्यप
 पघ्ठपपघ्जपपघ्झपपघ्ज्पपघ्त्पपघ्ठपपघ्ठप
 पघ्ठपपघ्गपपघ्त्तपपघ्थपपघ्दपपघ्थपपघ्नप
 पघ्नपपघ्यपपघ्फपपघ्बपपघ्भपपघ्मपपघ्यप
 पघ्नपपघ्छपपघ्लपपघ्लपपघ्लपपघ्वप
 पघ्शपपघ्षपपघ्सपपघ्हपपघ्क्कपपघ्खपपघ्गप
 पघ्जपपघ्ठपपघ्ठपपघ्फपपघ्यपप

पपइकपपइखपपइगपपइघपपइङ्गपपइचप
पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडप
पइढपपइणपपइतपपइथपपइदपपइधपपइनप
पइत्तपपइमपपइफपपइबपपइभपपइमपपइयप
पइप्पपपइरपपइलपपइळपपइळपपइवपपइशप
पइषपपइसपपइहपपइकपपइखपपइगपपइजप
पइहपपइढपपइफपपइयपप

पपङ्कपपङ्खपपङ्गपपङ्घपपङ्ङपपङ्चप
पङ्छपपङ्जपपङ्झपपङ्ञपपङ्टपपङ्ठपपङ्हुप
पङ्हुपपङ्णपपङ्तपपङ्थपपङ्दपपङ्धपपङ्नप
पङ्त्नपपङ्पपपङ्फपपङ्बपपङ्भपपङ्मपपङ्यप
पङ्गपपङ्ङपपङ्ळपपङ्ळपपङ्वपपङ्शप
पङ्षपपङ्सपपङ्हपपङ्क्कपपङ्खपपङ्गपपङ्जप
पङ्डपपङढपपङफपपङयपप

पपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्घपपढ्ङपपढ्चप
पढ्छपपढ्जपपढ्झपपढ्ञपपढ्टपपढ्ठपपढ्डप
पढ्ढपपढ्णपपढ्तपपढ्थपपढ्दपपढ्धपपढ्नप
पढ्न्पपढ्पपपढ्फपपढ्बपपढ्भपपढ्मपपढ्यप
पढ्द्रपपढ्रपपढ्ल्पपढ्ळपपढ्ळपपढ्वपपढ्शप
पढ्षपपढ्सपपढ्हपपढ्क्कपपढ्खपपढ्गपपढ्जप
पढ्ङपपढ्ढपपढ्फपपढ्घपप

पपण्कपपण्खपपण्गपपण्घपपण्ङपपण्चप
पण्छपपण्जपपण्झपपण्ञपपण्टपपण्ठपपण्डप
पण्ढपपण्णपपण्त्तपपण्थपपण्दपपण्धपपण्न्प
पण्न्पपण्पपपण्फपपण्बपपण्भपपण्मपपण्यप
पण्द्रपपण्द्रपपण्ल्पपण्ळपपण्ळपपण्वपपण्शप
पण्षपपण्सपपण्हपपण्क्कपपण्खपपण्गपपण्जप
पण्ङपपण्ढपपण्फपपण्घपप

पपत्कपपत्खपपत्गपपत्घपपत्ङपपत्चपपत्छप
पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्ढप
पत्तपपत्थपपत्दपपत्धपपत्नपपत्न्पपत्त्यप
पत्बपपत्भपपत्मपपत्यपपत्त्रपपत्त्पपत्त्वप
पत्लपपत्त्वपपत्शपपत्षपपत्सपपत्हपपत्क्कप
पत्खपपत्गपपत्जपपत्ङपपत्ढपपत्फपपत्घपप

पपथ्कपपथ्खपपथापपथ्घपपथ्ङपपथ्चपपथ्छप
पथ्जपपथ्झपपथ्ञपपथ्टपपथ्ठपपथ्डप
पथ्ढपपथ्णपपथ्त्तपपथ्थपपथ्दपपथ्धपपथ्न्प
पथ्न्पपथ्पपपथ्फपपथ्बपपथ्भपपथ्मपपथ्यप
पथ्द्रपपथ्द्रपपथ्ल्पपथ्ळपपथ्ळपपथ्वपपथ्शप
पथ्षपपथ्सपपथ्हपपथ्क्कपपथ्खपपथापपथ्जप
पथ्ङपपथ्ढपपथ्फपपथ्घपप

पपद्कपपपद्वखपपद्वगपपद्वघपपद्वङपपद्वचप
पद्वछपपद्वजपपद्वझपपद्वञपपद्वटपपद्वठप
पद्वडपपद्वढपपद्वणपपद्वत्तपपद्वथपपद्वदप
पद्वन्पपद्वन्पपद्वपपद्वफपपद्वबपपद्वभपपद्वम
पद्वयपपद्वद्रपपद्वरपपद्वल्पपद्वळपपद्वळप
पद्ववपपद्वशपपद्वषपपद्वसपपद्वहपपद्वक्कप
पद्वखपपद्वगपपद्वजपपद्वङपपद्वढपपद्वफ
पद्वघपप

पपध्कपपध्खपपध्गपपध्घपपध्ङपपध्चप
पध्छपपध्जपपध्झपपध्ञपपध्टपपध्ठप
पध्डपपध्ढपपध्णपपध्त्तपपध्थपपध्दप
पध्धपपध्न्पपध्न्पपध्पपपध्फपपध्बप
पध्भपपध्मपपध्यपपध्द्रपपध्द्रपपध्ल्
पध्ळपपध्ळपपध्वपपध्शपपध्षप
पध्सपपध्हपपध्क्कपपध्खपपध्गप
पध्जपपध्ङपपध्ढपपध्फपपध्घपप

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्घपपन्ङपपन्चप
पन्छपपन्जपपन्झपपन्ञपपन्टप
पन्ठपपन्डपपन्ढपपन्णपपन्त्तप
पन्थपपन्दपपन्धपपन्न्पपन्न्प
पन्पपपन्फपपन्बपपन्भपपन्म
पन्यपपन्द्रपपन्द्रपपन्ल्प
पन्ळपपन्ळपपन्वपपन्शप
पन्षपपन्सपपन्हपपन्क्कप
पन्खपपन्गपपन्जपपन्ङप
पन्ढपपन्फपपन्घपप

पपत्कपपत्खपपत्गपपत्घपपत्ङपपत्चप
पत्छपपत्जपपत्झपपत्ञपपत्टप
पत्ठपपत्डपपत्ढपपत्णपपत्त्तप
पत्थपपत्दपपत्धपपत्नप
पत्न्पपत्त्यपपत्बपपत्भप
पत्मपपत्यपपत्त्रपपत्त्प
पत्त्वपपत्लपपत्त्वप
पत्शपपत्षपपत्सप
पत्हपपत्क्कप
पत्खपपत्गप
पत्जपपत्ङप
पत्ढपपत्फ
पत्घपप

पपप्कपपप्खपपप्गपपप्घपपप्ङपपप्चप
पप्छपपप्जपपप्झपपप्ञपपप्टप
पप्ठपपप्डपपप्ढपपप्णपपप्त्तप
पप्थपपप्दपपप्धपपप्न्पपप्न्प
पप्पपपप्फपपप्बपपप्भपपप्म
पप्यपपप्द्रपपप्द्रपपप्ल्प
पप्ळपपप्ळपपप्वपपप्शप
पप्षपपप्सपपप्हपपप्क्कप
पप्खपपप्गपपप्जप
पप्ङपपप्ढप
पप्फपपप्घपप

पपफ्कपपफ्खपपफ्गपपफ्घपपफ्ङपपफ्चप
पफ्छपपफ्जपपफ्झपपफ्ञपपफ्टप
पफ्ठपपफ्डपपफ्ढपपफ्णप
पफ्त्तपपफ्थपपफ्दपपफ्धप
पफ्न्पपफ्न्पपफ्पपपफ्फप
पफ्बपपफ्भपपफ्मपपफ्यप
पफ्द्रपपफ्द्रपपफ्ल्प
पफ्ळपपफ्ळपपफ्वप
पफ्शपपफ्षप
पफ्सपपफ्हप
पफक्कपपफ्खप
पफ्गपपफ्जप
पफ्ङप
पफ्ढप
पफ्फप
पफ्घप

पपब्कपपब्खपपब्गपपब्घपपब्ङपपब्चप
पब्छपपब्जपपब्झपपब्ञप
पब्टपपब्ठपपब्डप
पब्ढपपब्णप
पब्त्तप
पब्थप
पब्दप
पब्धप
पब्न्प
पब्न्प
पब्पप
पब्फप
पब्बप
पब्भप
पब्मप
पब्यप
पब्द्रप
पब्द्रप
पब्ल्प
पब्ळप
पब्ळप
पब्वप
पब्शप
पब्षप
पब्सप
पब्हप
पब्क्कप
पब्खप
पब्गप
पब्जप
पब्ङप
पब्ढप
पब्फप
पब्घप

पपभ्कपपभ्खपपभ्गपपभ्घपपभ्ङपपभ्चप
पभ्छपपभ्जपपभ्झपपभ्ञप
पभ्टपपभ्ठपपभ्डप
पभ्ढपपभ्णप
पभ्त्तप
पभ्थप
पभ्दप
पभ्धप
पभ्न्प
पभ्न्प
पभ्पप
पभ्फप
पभ्बप
पभ्भप
पभ्मप
पभ्यप
पभ्द्रप
पभ्द्रप
पभ्ल्प
पभ्ळप
पभ्ळप
पभ्वप
पभ्शप
पभ्षप
पभ्सप
पभ्हप
पभ्क्कप
पभ्खप
पभ्गप
पभ्जप
पभ्ङप
पभ्ढप
पभ्फप
पभ्घप

पपशकपपश्खपपशगपपश्घपपश्ङपपश्चपपश्छप
पश्जपपश्झपपश्ञपपश्टपपश्ठपपश्डपपश्ढप
पश्णपपश्तपपश्थपपश्दपपश्धपपश्नप
पश्पपपश्फपपश्बपपश्भपपश्मपपश्यपपश्त्रप
पश्रपपश्लपपश्ळपपश्ळपपश्श्चपपश्शपपश्षप
पश्सपपश्हपपश्क्कपपश्खपपश्गपपश्जपपश्ङप
पश्ढपपश्फपपश्यपप

[illegible]

पपस्कपपस्खपपसगपपस्थपपस्टपपसचप
पस्थपपस्जपपस्झपपस्ञपपस्टपपस्थपपस्टप
पस्टपपसगपपस्तपपस्थपपस्टपपस्थपपस्नप
पस्नपपस्पपपस्फपपस्वपपस्भपपस्मपपस्यप
पस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रप
पस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रप
पस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रप
पस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रप

पपह्कपपह्खपपह्गपपह्घपपह्ङपपह्चपपह्छप
पह्जपपह्झपपह्झपपह्टपपह्ठपपह्डपपह्ढप
पह्णपपह्त्तपपह्थपपह्दपपह्धपपह्णपपह्त्तपपह्त्तप
पह्फपपह्बपपह्भपपह्मपपह्मपपह्पपह्पपह्पपह्प
पह्ळपपह्ळपपह्ळपपह्शपपह्शपपह्सपपह्हप
पह्कपपह्खपपह्गपपह्जपपह्झपपह्ङप
पह्फपपह्भपप

पपश्कपपश्खपपश्गपपश्घपपश्ङपपश्चपपश्छप
 पश्जपपश्झपपश्ञपपश्टपपश्ठपपश्डपपश्ढप
 पश्णपपश्तपपश्थपपश्दपपश्धपपश्नपपश्मप
 पश्फपपश्बपपश्भपपश्मपप पश्यपपश्लप
 पश्ळपपश्मपवपपश्शपप पश्षपपश्सपपश्हपप

पपक्षपपक्ष्वपपक्ष्वापपक्ष्वपपक्ष्वपपक्ष्वप
 पक्षजपपक्षझपपक्षञपपक्षटपपक्षठपपक्षडपपक्षढप
 पक्षणपपक्षतपपक्षथपपक्षदपपक्षधपपक्षनपपक्षमप
 पक्षफपपक्षबपपक्षभपपक्षमपप पक्ष्यपपक्षलप
 पक्षळपपक्षमपवपपक्षशपप पक्षषपपक्षसपपक्षहपप

पपक्कपपक्खपपक्कापपक्कपपक्कपपक्कप
 पक्कजपपक्कझपपक्कञपपक्कटपपक्कठपपक्कडपपक्कढप
 पक्कणपपक्कतपपक्कथपपक्कदपपक्कधपपक्कनपपक्कमप
 पक्कफपपक्कबपपक्कभपपक्कमपप पक्क्यपपक्कलप
 पक्कळपपक्कमपवपपक्कशपप पक्कषपपक्कसपपक्कहपप

पपक्कपपक्खपपक्कापपक्कपपक्कपपक्कप
 पक्कजपपक्कझपपक्कञपपक्कटपपक्कठपपक्कडपपक्कढपपक्कणप
 पक्कतपपक्कथपपक्कदपपक्कधपपक्कनपपक्कमपपक्कफपपक्कबप
 पक्कभपपक्कमपप पक्क्यपपक्कलपपक्कळपपक्कमपवप
 पक्कशपप पक्कषपपक्कसपपक्कहपप

पपक्कपपक्खपपक्कापपक्कपपक्कपपक्कप
 पक्कजपपक्कझपपक्कझपपक्कञपपक्कटपपक्कठप
 पक्कडपपक्कढपपक्कणपपक्कतपपक्कथपपक्कदपपक्कधप
 पक्कनपपक्कमपपक्कफपपक्कबपपक्कभपपक्कमपप
 पक्कयपपक्कलपपक्कळपपक्कमपवपपक्कशपप
 पक्कषपपक्कसपपक्कहपप

पपक्कपपक्खपपक्कापपक्कपपक्कपपक्कप
 पक्कजपपक्कझपपक्कञपपक्कटपपक्कठपपक्कडपपक्कढप
 पक्कणपपक्कतपपक्कथपपक्कदपपक्कधपपक्कनपपक्कमपपक्कफप
 पक्कबपपक्कभपपक्कमप पक्क्यपपक्कलपपक्कळपपक्कमपव
 पक्कशपप पक्कषपपक्कसपपक्कहपप